जपमाला और उसके संस्कार

साधकों के लिये माला बड़े महत्त्व की वस्तु है। भगवान् के स्मरण और नामजप में बड़ी ही सहायक होती है, इसीलिये साधक उसे अपने प्राणों के समान प्रिय समझते हैं और उसे गुप्त धन की भाँति सुरक्षित रखते हैं। माला को केवल गिनने की एक तरकीब समझकर अशुद्ध अवस्था में भी पास रखना, बायें हाथ से गिन लेना, लोगों को दिखाते फिरना, पैरतक लटकाये रहना, जहाँ कहीं रख देना, जिस किसी चीज से बना लेना तथा चाहे जिस प्रकार गूँथ लेना सर्वथा वर्जित है। ऐसी बातें समझदारी और श्रद्धा की कमी से ही होती हैं, विशेषकर उन लोगों से जिन्होंने किसी गुरु से विधिपूर्वक दीक्षा न लेकर माला के विधि-विधान पर विचार ही नहीं किया है। शास्त्रों में माला के संबंध में बहुत विचार किया गया है। यहाँ संक्षेप से उसका वर्णन किया जा रहा है।

करमाला

माला प्राय: तीन प्रकार की होती है- करमाला, वर्णमाला और मणिमाला।[1] अँगुलियों पर जो जप किया जाता है, वह करमाला का जप है। यह दो प्रकार से होता है- एक तो अँगुलियों से ही गिनना और दूसरा अँगुलियों के पर्वों पर गिनना। शास्त्रत: दूसरा प्रकार ही स्वीकृत है। इसका नियम यह है कि अनामिका के मध्यभाग से नीचे की ओर चले, फिर कनिष्ठा के मूल से अग्रभाग तक; और फिर अनामिका और मध्यमा के अग्रभाग पर होकर तर्जनी के (अग्रभाग से होते हुए) मूलतक जाय। इस क्रम से अनामिका के दो, कनिष्ठा के तीन, पुन: अनामिका का एक, मध्यमा का एक और तर्जनी के तीन पर्व- कुल दस संख्या होती है। मध्यमा के दो पर्व सुमेरु के रूप में छूट जाते हैं।

आरभ्यानामिकामध्यं पर्व देवीमनुक्रमात्।
तर्जनीमूलपर्यन्तं जपेद्दशसु पर्वसु।।
मध्यमाङ्गुलिमूले तु यत्पर्वद्वितयं भवेत्।
तं वै मेरुं विजानीयाज्जपेत्तं नातिलङ्घयेत्।।

(आचारेन्दु: पृ. 82 तथा मामूली अन्तर के साथ धर्मसिन्धु: पृ. 545 पादटिप्पणी)

साधारणत: करमाला का यही क्रम है, परन्तु अनुष्ठानभेद से इसमें अन्तर भी पड़ता है। जैसे शक्ति के अनुष्ठान में अनामिका के दो पर्व, कनिष्ठा के तीन, पुन: अनामिका का अग्रभाग एक, मध्यमा के तीन पर्व और तर्जनी का एक मूलपर्व- इस प्रकार दस संख्या पूरी होती है। (धर्मसिन्धु: पृ. 545 पादटिप्पणी।)

करमाला से जप करते समय अँगुलियाँ अलग-अलग नहीं होनी चाहिये अर्थात् आपस में सटी होनी चाहिये। थोड़ी-सी हथेली मुड़ी रहनी चाहिये। मेरु का उल्लंघन और पर्वों की संधि (गाँठ) का स्पर्श निषिद्ध है।

---

1. **माला तु त्रिविधा प्रोक्ता प्रथमा वर्णमालिका।**
द्वितीया चरमालोक्ता तृतीया करमालिका।। (पुरश्चर्यार्णव पृ. 430)

अङ्गुलीर्न वियुञ्जीत किंचिदाकुञ्चिते तले।
अङ्गुलीनां वियोगे तु छिद्रेषु स्रवते जपः।।
अङ्गुल्यग्रे च यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलङ्घितम्।
पर्वसंधिषु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्।।

(आचारेन्दुः पृ. 126 तथा मामूली अन्तर के साथ पुरश्चर्यार्णव पृ. 448 पर)*

हाथ को हृदय के सामने लाकर, अँगुलियों को कुछ टेढ़ी करके वस्त्र से उसे ढककर दाहिने हाथ से अंगूठे के माध्यम से जप करना चाहिये। (पुरश्चर्यार्णव पृ. 449)

हृदये हस्तमारोप्य तिर्य्यक्कृत्वा कराङ्गुलीः।
आच्छाद्य वाससा हस्तौ दक्षिणेन सदा जपेत्।। (अनुष्ठानप्रकाशः पृ. 5)

जप अधिक संख्या में करना हो तो इन दशकों को स्मरण नहीं रक्खा जा सकता। इसलिये उसको स्मरण करने के लिये एक प्रकार की गोली बनानी चाहिये। लाक्षा, रक्तचन्दन, सिन्दूर और गौ के सूखे कण्डे को चूर्ण करके सबके मिश्रण से वह गोली तैयार करनी चाहिये।[1] अक्षत, अँगुली, अन्न, पुष्प, चन्दन अथवा मिट्टी से उन दशकों का स्मरण रखना निषिद्ध है। माला की गिनती भी इनके द्वारा नहीं करनी चाहिये। (आचारेन्दुः पृ. 131 तथा पुरश्चर्यार्णव पृ. 448)

वर्णमाला

वर्णमाला का अर्थ है– अक्षरों के द्वारा संख्या या गणना करना। यह प्रायः अन्तर्जप में काम आती है, परन्तु बहिर्जप में भी इसका निषेध नहीं है। वर्णमाला के द्वारा जप करने का प्रकार यह है कि पहले वर्णमाला का एक अक्षर बिन्दु लगाकर उच्चारण कीजिये और फिर मन्त्र का– इस क्रम से 'अ' वर्ग के सोलह (अर्थात् अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ, अं तथा अः), कवर्ग से पवर्गतक के पचीस और यवर्ग के हकारतक आठ और पुनः एक लकार– इस प्रकार पचासतक गिनते जाँय; फिर लकार से लौटकर अकारतक आ जाइये– सौ की संख्या पूरी हो जायगी। 'क्ष' को सुमेरु मानते हैं। उसका उल्लंघन नहीं होना चाहिये।[2] संस्कृत में 'त्र' और 'ज्ञ' स्वतंत्र अक्षर नहीं हैं, वे संयुक्ताक्षर माने जाते हैं। इसलिये उनकी गणना नहीं होती। वर्ग भी सात नहीं, आठ माने जाते हैं। आठवाँ शकार से प्रारम्भ होता है। इनके द्वारा 'अं कं चं टं तं पं यं शं'

---

* ये श्लोक थोड़े परिवर्तन के साथ 'अनुष्ठानप्रकाशः' पृ. 5 में भी पाये जाते हैं।

1. 'आचारेन्दुः' में गोली के मिश्रणों के घटक इनसे भिन्न बताये गये हैं -

लाक्षाकुसीदं सिन्दूरं चन्दनं च करीषकम्। संमेल्य गुटिकां कृत्वा जपसंख्यां तु कारयेत्।।

(आचारेन्दुः पृ. 131)

2. **अकारादिक्षकारान्तैर्विन्दुवन्मातृकाक्षरैः। अनुलोमविलोमस्थैः क्लृप्तया वर्णमालया।**
प्रत्येकवर्णयुग्मन्त्राः जप्ताः स्युः सर्वसिद्धिदाः।
..। मेरुरूपं क्षकारं हि साधको नैव लङ्घयेत्।।

(पुरश्चर्यार्णव पृ. 430)

यह गणना करके आठ बार और जपना चाहिये– ऐसा करने से जप की संख्या 108 हो जाती है। ये अक्षर तो माला के मणी हैं। इनका सूत्र है कुण्डलिनी शक्ति। वह मूलाधार से आज्ञाचक्रपर्यन्त सूत्ररूप से विद्यमान है। उसी में ये सब वर्ण मणिरूप से गुथे हुए हैं। इन्हीं के द्वारा आरोह और अवरोह क्रम से अर्थात् नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे जप करना चाहिये।

मणिमाला

जिन्हें अधिक संख्या में जप करना हो, उन्हें मणि-माला रखना अनिवार्य है। मणि(मनिया या मनका) पिरोये होने के कारण इसे मणिमाला कहते हैं। यह माला अनेक वस्तुओं की होती है। उदाहरण के लिये रुद्राक्ष, तुलसी, शंख, पद्मबीज, जीवपुत्रक, मोती, स्फटिक, मणि, रत्न, सुवर्ण, मूँगा, चाँदी, चन्दन और कुशमूल आदि– इन सभी के मनियों से माला तैयार की जा सकती है। इनमें वैष्णवों के लिये तुलसी और स्मार्त, शैव, शाक्त आदि के लिये रुद्राक्ष सर्वोत्तम माना गया है।

माला बनाने में इतना ध्यान रखना चाहिये कि एक चीज की माला में दूसरी चीज न लगायी जाय। विभिन्न कामनाओं के अनुसार भी मालाओं में भेद होता है और देवताओं के अनुसार भी। उनका विचार कर लेना चाहिये। माला के मणि(दाने) छोटे-बड़े न हों। एक सौ आठ दानों की माला सब प्रकार के जपों में काम आती है। ब्राह्मणकन्याओं के द्वारा निर्मित कपास के सूत से माला बनायी जाय तो सर्वोत्तम होती है। शान्तिकर्म में श्वेत, वशीकरण में रक्त, अभिचार में कृष्ण और मोक्ष तथा ऐश्वर्य के लिये रेशमी सूत की माला विशेष उपयुक्त है।

कार्प्पाससंभवं सूत्रं धर्म्मकामार्थमोक्षदम्।
तच्च विप्रेन्द्रकन्याभिर्निर्म्मितं च सुशोभनम्।।
शुक्लं रक्तं तथा कृष्णं पट्टसूत्रमथापि वा।
शान्तिवश्याभिचारेषु मोक्षैश्वर्य्यजपेषु च।। (अनुष्ठानप्रकाश: पृ. 3-4)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के लिये क्रमश: श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्ण के सूत्र श्रेष्ठ हैं। सभी वर्णों के लिये रक्त वर्ण का सूत सभी कामनाओं को प्रदान करनेवाला कहा गया है। सूत को तिगुना करके फिर से तिगुना कर देना चाहिये। प्रत्येक मणि को गूँथते समय प्रणव के साथ एक-एक अक्षर(मातृकावर्ण) का उच्चारण, बिन्दु से संयुक्त कर, करते जाना चाहिये– जैसे '‌ॐ **अं**' कहकर प्रथम मणि तो 'ॐ **आं**' कहकर दूसरी मणि को गूँथना चाहिये।

शुक्लं रक्तं तथा पीतं कृष्णं वर्णेषु च क्रमात्।
सर्वेषामेव वर्णनां रक्तं सर्वेप्सितप्रदम्।।
त्रिगुणं त्रिगुणीकृत्य ग्रथयेच्छिल्पशास्त्रत:।
एकैकं मातृकावर्णं सतारं प्रजपन्सुधी:।।
मणिमादाय सूत्रेण ग्रथयेन्मध्यमध्यत:। (अनुष्ठानप्रकाश: पृ. 4)

दो मणियो के बीच में जो गाँठ देते हैं, उसके संबंध में विकल्प है। चाहे तो गाँठ दें चाहे तो न दें। दोनों ही बातें ठीक हैं। माला गूँथने का मन्त्र अपना इष्ट मन्त्र भी है। अन्त में ब्रह्मग्रन्थि देकर सुमेरु गूँथे और पुनः ग्रन्थि लगावे। स्वर्ण आदि के तार से भी माला पिरोई जा सकती है। रुद्राक्ष के दानों में मुख और पुच्छ का भेद भी होता है। मुख कुछ ऊँचा होता है और पुच्छ नीचा। पिरोने के समय यह ध्यान रखना चाहिये कि दानों का मुख परस्पर मिलता जाय अथवा पुच्छ। गाँठ देनी हो तो तीन फेरे की अथवा ढाई फेरे की लगानी चाहिये। ब्रह्मग्रन्थि भी लगा सकते हैं। इस प्रकार माला का निर्माण करके उसका संस्कार करना चाहिये। (आचारेन्दुः पृ. 127 तथा अनुष्ठानप्रकाशः पृ. 4)

माला – संस्कार

पीपल के नौ पत्ते लाकर एक को बीच में और आठ को अगल–बगल इस ढंग से रक्खे कि वह अष्टदल कमल–सा मालूम हो। बीचवाले पत्ते पर माला को कुशोदकसहित पंचगव्य से धोकर रक्खे और मातृका वर्णों जैसे **'ॐ ह्रीं, अँ, आँ, इँ'** इत्यादि से लेकर **'हँ, क्षँ'** पर्यन्त समस्त वर्णो का उच्चारण करके पंचगव्य[1] के द्वारा क्षालन करे और फिर 'सद्योजात' मन्त्र पढ़कर पवित्र जल से उसको धो डाले। 'सद्योजात' मन्त्र इस प्रकार है–

---

1. ताँबें के वर्ण–जैसी गौ का मूत्र 'गायत्री' से 8 भाग, लाल गौ का गोबर 'गन्धद्वारां०' से 16 भाग, सफेद गौ का दूध 'आप्यायस्व०' से 12 भाग, काली गौ का दही 'दधि क्राव्णो०' से 10 भाग और नीली गौ का घी 'तेजोऽसि शुक्र०' से 8 भाग लेकर उनमें कुशोदक मिलाने और फिर उन्हें छान लेने से पंचगव्य होता है।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। ताम्रारुणश्वेतकृष्णनीलानामाहरेद् गवाम्।।
अष्ट षोडश अर्कांशा दश अष्ट क्रमेण च। गायत्र्या गन्धद्वारां च आप्यायदधिक्रावणः।
तेजोऽसिशुक्रमन्त्रैश्च पञ्चगव्यमकारयेत्।।

(व्रतपरिचय, पं. हनूमान् शर्मा, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत् 2051, पृ. 21–22)

कहीं–कहीं पर पंचगव्य का दूसरा वर्णन प्राप्त होता है–

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोद्कम्। निर्दिष्टं पञ्चगव्यं च पवित्रं पापशोधनम्।।
गोमूत्रं कृष्णवर्णायाः श्वेतायाश्चैव गोमयम्। पयश्च ताम्रवर्णाया रक्ताया गृह्यते दधि।।
कपिलाया घृतं ग्राह्यं सर्वं कापिलमेव वा। मूत्रमेकपलं दद्यादङ्गुष्ठार्द्धं तु गोमयम्।।
क्षीरं सप्तपलं दद्याद्दधि त्रिपलमुच्यते। घृतमेकपलं दद्यात् पलमेकं कुशोदकम्।।
गायत्र्याऽऽदाय गोमूत्रं गन्धद्वारेति गोमयम्। आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिक्राव्णस्तथा दधि।।
तेजोऽसि शुक्रमित्याज्यं देवस्य त्वा कुशोदकम्। पञ्चगव्यमृचापूतं..।।

(पराशरस्मृति 11/29–34, गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त शिवपुराण के पृ. 633–634 पर उद्धृत)

अर्थात्–गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घी और कुशा का जल–ये पवित्र और पापनाशक 'पञ्चगव्य' कहे जाते हैं। (कुशोदक मिश्रित पञ्चगव्य को ब्रह्मकूर्च भी कहते हैं।) ब्रह्मकूर्च का विधान करनेवाले को उचित है कि काली गौ का गोमूत्र, सफेद गौ का गोबर, ताँबे के रंग की गौ का दूध, लाल गौ का दही और कपिला(भूरे रंग की) गौ का घी अथवा इन सबके अभाव में कपिला गौ का ही गोमूत्र आदि पाँचों वस्तु लाये; एक पल गोमूत्र, आधे अगूँठे भर गोबर, सात पल दूध, तीन पल दही, एक पल घी और एक पल कुशा का जलग्रहण करे। 'गायत्री' मन्त्र से गोमूत्र, 'गन्धद्वारा०' से गोबर, 'आप्यायस्व०' मन्त्र से दूध, 'दधिक्राव्ण०' से दही, 'तेजोऽसि शुक्र०' मन्त्र से घी और 'देवस्यत्वा०' मन्त्र से कुशा का जल ग्रहण करे।

ॐसद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवेनातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः।

इसके पश्चात् वामदेव मन्त्र से माला का चन्दन, अगर, गन्ध आदि के द्वारा घर्षण करे। वामदेवमन्त्र निम्नलिखित है–

ॐ **वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।**

तत्पश्चात् अघोरमन्त्र से अगरु और गुग्गुल का धूपदान करे। अघोरमन्त्र इस प्रकार है–

ॐ **अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।**

तदनन्तर तत्पुरुषमन्त्र से कस्तूरी, चन्दन आदि का लेपन करे। तत्पुरुषमन्त्र इस प्रकार है–

ॐ **तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।**

इसके पश्चात् मेरुसहित एक–एक दाने पर एक–एक बार अथवा सौ–सौ बार ईशानमन्त्र का जप करना चाहिये।[1] ईशानमन्त्र यह है–

ॐ **ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।**

ईशान मन्त्र को जपकर माला की प्राण–प्रतिष्ठा करनी चाहिये। प्राण–प्रतिष्ठा की विधि इस प्रकार है।

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि च्छन्दांसि। क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता। आँबीजँ ह्रींशक्तिः क्रौंकीलकम् अस्यां मालायां प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐ **आँ ह्रीं क्रौं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ अः क्रौं ह्रीं आँ हँसः सोहँ अस्यां मालायां प्राणा इह प्राणास्तिष्ठन्तु** ॐ **आँ ह्रीं क्रौं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ अः क्रौं ह्रीं आँ हँसः सोहँ अस्यां मालायां जीव इह स्थितः।** ॐ**आँ ह्रीं क्रौं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ अः क्रौं ह्रीं आँ हँसः सोहँ अस्यां मालायां सर्वेन्द्रियाणि। वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानीहा–गत्य स्वस्ति सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।** (अनुष्ठानप्रकाशः पृ. 75)

इन मन्त्रों से प्रतिष्ठा करने के बाद पुष्प, अक्षत तथा कुंकुमादि को माला पर छिड़कने के पश्चात् गर्भाधानादि पन्द्रह संस्कारों की सिद्धि के लिये पन्द्रह बार प्रणव मन्त्र (ओंकार) का उच्चारण कर निम्नलिखित रूप से प्राणशक्ति का ध्यान करें।

---

1. धर्मसिन्धुः (पृ. 630) के अनुसार **'ईशान मन्त्र'** के जप के पश्चात् माला–मेरु का **'अघोरेभ्यो०'** मन्त्र से सौ बार अभिमन्त्रण करे। तदनन्तर **'सद्योजातादि०'** उपर्युक्त पाँचों मन्त्रों से माला की पाँचों उपचार से पूजा करे।

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पञ्च बाणान्।

बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः। (अनुष्ठानप्रकाशः पृ. 75)

तदनन्तर इष्ट देवता का आवाहन कर इष्टमन्त्र से सविधि-षोडशोपचार पूजा करके माला की प्रार्थना करनी चाहिये-

ॐ (ह्रीं) मालेमाले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।

यदि माला में 'शक्ति' की प्रतिष्ठा की हो (जैसा कि ऊपर किया गया है) तो इस प्रार्थना के पहले 'ह्रीं' जोड़ लेना चाहिये और रक्तवर्ण के पुष्प से पूजा करनी चाहिये। वैष्णवों के लिये माला-पूजा का मन्त्र है-

ॐ ऐं श्रीं अक्षमालायै नमः।

इस प्रकार से प्रार्थना कर '**अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा**'-इस प्रकार कहकर मन्त्र का जप दोपहर पर्यन्त करें। जप के अन्त में प्रणव उच्चारण के साथ इस प्रकार प्रार्थना करें- "ॐ **त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव। शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा। तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोऽस्तु ते।।**" ॐ **ह्रीं सिद्ध्यै नमः।** इसके उपरान्त माला को सिर से लगाकर प्रणाम कर गोमुखी में रख देना चाहिये। कहीं-कहीं पर माला संस्कार की विधि में अन्तर पाया जाता है। माला की उपर्युक्त प्रथम प्रार्थना (ॐ **माले-माले०**) के बाद कहीं-कहीं पर[1] कहा गया है कि अकारादि से क्षकारान्त तक के प्रत्येक वर्ण से पृथक्-पृथक् पुटित करके अपने इष्टमन्त्र का एक सौ आठ बार जप करना चाहिये (ठीक वर्णमाला की विधि के अनुसार)। इसके पश्चात् एक सौ आठ घी की आहुति द्वारा हवन करे अथवा दो सौ सोलह बार इष्टमन्त्र का जप कर ले।

आज्याहुतीरष्टशतं मूलेन जुहुयात्ततः।
संपाताज्यं तु मालायं प्रत्याहुति विनिक्षिपेत्।।
होमाशक्तौ तु मूलेन मालाया अभिमन्त्रणम्।
होमसंख्याद्विगुणितसंख्यया साधकश्चरेत्।। (आचारेन्दुः पृ. 128)

उस माला पर दूसरे मन्त्र का जप न करे।[2] स्वयं हिले नहीं और माला को हिलावे नहीं। आवाज़ नहीं होनी चाहिये और माला हाथ से छूटकर गिरनी नहीं चाहिये। माला का टूटना मृत्यु ही है-ऐसा समझकर निरन्तर सावधान रहना चाहिये। उसे बड़े आदर से पवित्र स्थान में रखना चाहिये

1. आचारेन्दुः पृ. 128
2. आचारेन्दुः पृ. 128 (परन्तु वहाँ पर यह भी कहा गया है कि शिवमन्त्र की माला से शक्तिमन्त्र तथा शक्तिमन्त्र की माला से शिवमन्त्र का जप किया जा सकता है।)

और प्रार्थना करनी चाहिये-

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्वसिद्धिप्रदा मता।
तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर्नमोऽस्तु ते।।

ऐसी प्रार्थना करके माला को गुप्त रखना चाहिये।[1] अंगुष्ठ और मध्यमा के द्वारा जप करना चाहिये और तर्जनी से माला का कभी स्पर्श नहीं करना चाहिये। जप करते समय सुमेरु का उल्लंघन नहीं करना चाहिये। सुमेरु पर पहुँच कर माला को उल्टी घुमा लेना चाहिये।

माला का सूत पुराना हो जाय तो उसे फिर से गूँथकर सौ बार जप करना चाहिये।

जीर्णे सूत्रे पुनः सूत्रं ग्रन्थयित्वा शतं जपेत्। (आचारेन्दुः पृ. 128)

माला प्रमादवश हाथ से गिर पड़े अथवा निषिद्ध स्पर्श हो जाय तो भी मूलमन्त्र एक सौ आठ बार जप करना चाहिये। टूट जाने पर फिर गूँथकर पूर्ववत् एक सौ आठ बार जप करना चाहिये।

प्रमादाद्गलिता हस्तान्माला छिन्नाऽथ वा भवेत्।
स्पृष्टा वा स्यान्निषिद्धेन मूलमष्टशतं जपेत्।। (आचारेन्दुः पृ. 128)

माला के इन नियमों में सावधानी बरतने से शीघ्र ही सिद्धि-लाभ होता है।

माला के संस्कार की एक और प्रक्रिया है जिसका आगम-कल्पद्रुम में उल्लेख हुआ है। 'भूतशुद्धि आदि करके माला में विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य एवं गणेश का आवाहन करके पूजा करनी चाहिये। फिर माला को पंचगव्य में डालकर '**ॐ हे सौः**' इस मन्त्र से निकालकर उसको सोने के पात्र में रक्खे। उसके ऊपर पंचामृत के नियम से दूध, दही, घी, मधु और शीतल जल से स्नान करावे। इसके पश्चात् चन्दन, कस्तूरी और कुंकुम आदि सुगन्धद्रव्य से माला को लिप्त करे और '**ॐ हे सौः**' इस मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करे। इसके बाद माला में नवग्रह, दिक्पाल और गुरुदेव की पूजा करके उस माला को ग्रहण करना चाहिये।'

(यह लेख गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित कल्याण के 'साधनांक', एवं 'धर्मसिन्धुः', 'अनुष्ठानप्रकाशः' तथा 'आचारेन्दुः' पर आधारित है।)

❀❀❀❀❀❀

---

1. माला को गोमुखी आदि में छुपा कर रखना चाहिये। माला को गुप्त रखने के लिये रेशम के लाल या पीले वस्त्र होने चाहिये। कपास के वस्त्र से भी माला गुप्त रखी जा सकती है। परन्तु वे वस्त्र काले व बहुरंगी न हों। ऊन के वस्त्र से माला को न ढकें।

गोमुखादौ ततो मालां गोपयेन्मातृजारवत्।
कौशेयं रक्तवर्णं च पीतवस्त्रं सुरेश्वरि।।
अथ कार्पासवस्त्रेण यत्नतो गोपयेत् सुधीः।
वाससाऽऽच्छादयेन्मालां सर्वमन्त्रं महेश्वरि।।
न कुर्यात् कृष्णवर्णं तु न कुर्याद्बहुवर्णकम्।
न कुर्याद्रोमजं वस्त्रमुक्तवस्त्रेण गोपयेत्।। (धर्मसिन्धुः पृ. 629 पादटिप्पणी)